रात्रि क्लास 9/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बाप बच्चों को कहते हैं अपन को आत्मा समझो। मिलिट्री को कहते हैं ना अटेन्शन प्लीज। बाप भी कहते हैं अटेन्शन। अर्थात् अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो और बाप से सुनो। जितना हो सके अपने चार्ट को बढ़ाओ। कहाँ भी जाओ जितना हो सके बाबा की याद में रहो वा ज्ञान की चिटके। सिवाय ज्ञान के और कुछ न सुनना है न सुनाना है। सी नो ईविल..... बाप समझाते रहते हैं यह ड्रामा है। सेकण्ड व सेकण्ड वही पास होता है जो कल्प पहले पास हुआ है। यह तो बाप ने समझाया है कल्प कल्प। कितने कल्प होंगे? अनगिनत। तो जो पास होता है, ड्रामा। आज बाजार में गये कोई चीज़ ले आया, पसन्द न आई अच्छा आ तो गया। उनका चिन्तन नहीं। कल्प पहले भी ऐसे ही ले आये थे। कल्प कल्प लावेंगे। चिन्तन बन्द। वाहयात संकल्प न चलनी चाहिए। अच्छा वा बुरा काम कर आया वह हो गया उनके लिए चिन्तन नहीं रखना है। कोई कहे यहाँ न लेना था यह कहना भी भूल है। तुम ड्रामा को नहीं जानते। ड्रामा में था सो हो गया। समझो बम्बई में कालवा देवी में प्रदर्शनी हो रही है जो कुछ हुआ था वही होगा। ड्रामा कराती रहती है। कर लिया फिर कह(न)ा यह न करना था, भूल है। आगे के लिए ख्याल करना चाहिए। बाकी उनका चिन्तन कुछ भी नहीं। ड्रामा पर इतना रहना चाहिए। कहना भी न है इसने यह भूल की। यह भी कहना न चाहिए। हो गया सो ठीक है। काम तो चलता रहता है ना। काम कर लियो फिनिश। फिर कुछ कहना न चाहिए यह ऐसे नहीं करते थे। किसके दिल को नाराज़ न करना चाहिए। डोरापा न देना चाहिए। हो गया ना। ड्रामा पर न चलने से घुटका बहुत खावेंगे। जो समाचार सुनाया बाबा को, कल्प पहले भी सुनाया। जैसे कि सुना न सुना। जरा भी हर्ष शोक नहीं। कोई ने खर्चा फालतू किया चित्र ठीक न बनाया। हो गया ना ड्रामा में। हम ख्याल ही क्यों करें। सुनता ऐसे हूँ जैसे कि नहीं सुनता हूँ। पास्ट हो गया ना। फिकरात रहे वा दिल में दुख हो। नहीं। नुकसान हो गया ना। कोई हर्जा नहीं फिर कल्प2 होता रहेगा। फिकरात की क्या बात है। हाँ, आगे के लिए समझाना होता है यह भूल है। बाकी जो पास्ट हुआ इसका थोड़े ही कुछ हो सकता है। किसको डोरापा देने दुख होता है। दुख तो न देना है। बाबा आया सुख देने। ऐसी बात न करनी चाहिए, किसको दुख हो। समझानी देंगे। ड्रामा में जो था वह हो गया। भूल करता है, यह उनकी चाल ऐसी है। भूल करते रहेंगे, सुधरेंगे नहीं तो पद कम। टाइम है थोड़ा। कई विश्वास नहीं करते हैं। बाबा कहते हैं आठ वर्ष भी नहीं। पीछे ज्ञान आदि सुन न सकेंगे। ऐसी घबराहट आवेगी जो बात मत पूछो। दुखों के पहाड़ गिरने हैं। भारत तो क्या सारी दुनिया रहेगी ही नहीं बाप के होते। बाप जानते हैं यह सभी खत्म हो जाना है। अभी तो अनेक धर्म हैं। बाप आये हैं एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करने न कि हिन्दू। हूबहू जैसे कल्प पहले स्थापना, विनाश हुई है वही होगा सेकण्ड व सेकण्ड ज़रा भी फर्क नहीं। इसमें बुद्धि बड़ी रायल चाहिए। यह भक्ति मार्ग भी फिर होगा जो कुछ हुआ है कल्प कल्प होता रहेगा। फिर भी होगा। ड्रामा को समझने लिए बुद्धि बड़ी अच्छी चाहिए। बाप आये हैं स्थापन करने। हूबहू कल्प पहले मिसल स्थापना होती रहेगी। मनुष्य कहेंगे फिर यही पहाड़ रहेंगे। देहली खत्म हो जावेगा। फिर ऐसे ही होंगे। फिर ऐसे ही होगा। यह बातें तुम अभी समझते हो। बाप बैठ समझाते हैं वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉगराफी। जो कुछ समझाया है रिपीट होती रहती है। यह बड़ी बेहद की कहानी है। बेहद का ड्रामा कितना स्वेज ड्रामा है। बाप कहते हैं यह रावण राज्य सारी दुनिया में है सिर्फ भारत में ही नहीं। व्यास ने झूठी बातें लिखी हैं फिर भी होगा। तुम्हारी सीढ़ी कितनी अच्छी है। यह भी तुम 84 जन्म वाले हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। जिनता पढ़ेंगे उतना पहले आवेंगे। कम पढ़ेंगे तो देरी से आवेंगे। बाप तो कहते हैं स्कॉलरशिप पाने पुरुषार्थ करो। स्कॉलरशिप बड़ी भारी है। इसमें अटेन्शन फर्स्ट क्लास चाहिए। बड़ी भारी मेहनत है। कोई भी बात होती है अच्छी वा बुरी, समझो मर जाता है। ज्ञान है तो कह ड्रामा अुनसार हुआ। फिकरात की बात ही नहीं। घाटा पड़ा, जो पक्के होंगे उनको कुछ भी फिक्र नहीं होगा। मनुष्य के (सभी) दुःख यहाँ ही दूर होनी है। जो फिर 21 जन्म लिये स्थाई हो–

जावेंगे। तो ऐसी अवस्था बच्चों को अभी तक इस समय तक बड़ी मुश्किल है। टीका–टिप्पणी चलती रहती है। ऐसे क्यों किया यह ठीक नहीं। जो हुआ सो हुआ। अभी पुरुषार्थ करना है। तुम बाप को याद करना चाहते हो। दिल होती है ऐसे बाबा को तो निरन्तर याद करें। माया भुलाती क्यों है। बड़ी दुस्तर है। हाँ, उनसे खबरदार रहना है। युद्ध चलती है। पुरुषार्थ करते–2 पिछाड़ी में स्कॉलरशिप के लायक थोड़े बनते हैं। बाप को याद करने से सारा चक्र बुद्धि में याद आ जावेगा। जैसे बाप ज्ञान का सागर है तुम बच्चे भी हो ना। सदैव खुश मिजाज। चेहरा सदैव हर्षित। जानते हैं कल्प–कल्प हम बाप से वर्सा लेते हैं। उठते–बैठते, चलते–फिरते अपना स्वीट होम ही याद आना चाहिए। आधा कल्प यज्ञ–तप, दान–पुण्य किये। अब ऊँचा चढ़ना है। बाप को पहचाना, निश्चय हुआ फिर बाप में कब संशय हो नहीं सकता। लौकिक बाप में कब संशय होता है क्या? निश्चय बुद्धि विजयन्ति। संशय बुद्धि विनश्यन्ति। यह स्कूल है। तुम पढ़ते हो नर से नारायण बनने लिए। राजधानी स्थापन होती है; परन्तु पुरुषार्थ तो जोर से करावेंगे ना। समझते हो क्या बनेंगे। कहते हैं बाबा हम तो नई दुनिया में आवेंगे। पुराने में क्यों आवेंगे। हम तो लक्ष्मी–नारायण के राज्य में आवेंगे। हम तो पढ़ाई में बाबा को फॉलो करेंगे। यह भी पढ़कर नम्बरवन जाता है ना। बूढ़ा पढ़कर ल0ना0 बन सकता है तो हम क्यों नहीं। बहुत खुशी होनी चाहिए। बाप कितना मीठा है। बाबा कमाल है आपकी। बड़ी जादूगर हो। विश्व का मालिक बनाते हो। गीत है ना। आप सभी कुछ दे देते हो। कोई और चीज़ ही नहीं जो आप न देते हो। धरती आसमान सभी के मालिक बनाये देते हो। एक भारत ही विश्व में था। कहेंगे यह कैसे हो सकता और तो सभी खलास हो जावेंगे। असम्भव है। ऐसे–2 कह देते हैं। अरे कल की बात थी। ल0ना0 का राज्य था। कितनी उन्हों की महिमा है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉगराफी रिपीट होगी ना। मैं आता हूँ स्वर्ग की स्थापना करने। वह बदल तो नहीं सकता है ना। यह बातें शास्त्रों में हैं नहीं। गीता में आटे में लून है। भगवान कहते हैं देह के सभी सम्बन्ध छोड़ अपन को आत्मा समझो। यह राइट बात है। एक गीता में ही कुछ है। बाकी सभी में है वाह्यात बातें। गीता का युग यह है जबकि भारत स्वर्ग बनता है। सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चक्र फिरेगा ना। तुम भी कहते हो बाबा अनेक बार स्वर्ग का वरसा आप से लिया है। सुख–दुख का खेल बाप ही आकर समझाते हैं अच्छी तरह से। तुम हो हीरो–हीरोइन। राज्य पाते हो फिर माया से हार खाते हो। हार–जीत का खेल और कोई धर्म के लिए है नहीं। ऊँच ते ऊँच बनते हो। कहते हैं क्या सिर्फ भारत ही स्वर्ग बनेगा? हाँ, और कोई बन न सके। झाड़ देखो सन्यासी आते ही हैं देरी से वह राजयोग कैसे सिखलावेंगे। परमपिता–परमात्मा शिव ही आकर ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण देवता, क्षत्री, कुल की स्थापना करते हैं। शास्त्रों में भी यह बातें हैं नहीं तो तो तंग करते हैं। अरे शास्त्र आदि सब हमने 63 जन्म पढ़े हैं, भक्ति की है। बाप भी समझाते हैं पहले नम्बर में यह ही गिरते हैं ना। कृष्ण पहला नम्बर प्रिन्स है ना। दूसरा जन्म में तो नाम–रूप टाइम आदि सब बदल जाता है। कृष्ण क्या, कब था कुछ भी किसी को पता नहीं। इनको कहा जाता है कांटों का जंगल। जानवर से भी बदतर हैं। बन्दरों में विकार बहुत होते हैं। बाप भी कहते हैं बन्दर मिसल मनुष्य बन पड़े हैं। सूरत मनुष्य की सीरत बन्दर जैसी है। फिर सीरत देवताओं की जैसे बनानी है। बन्दर जैसे मनुष्यों को बाप आकर देवता बनाते हैं। कितना रात–दिन का फर्क है। बाप कहते हैं मैं भी बच्चों का सर्वेन्ट हूँ। बच्चों को ब्रह्माण्ड का और विश्व का मालिक बनाता हूँ। मैं बनता हूँ क्या? कल्प2 बच्चों को ही आकर समझाता हूँ। तो बिचारे याद में लग जायें। पापों का बोझा सिर से उतारें। जो करेंगे सो पावेंगे। बाल–बच्चे तो 63 जन्म सम्भालते आये हो। कितने बच्चे पैदा करते हैं। कितनी गंदी दुनिया है। नाम ही है वैश्यालय। सभी विकार में जाते। वह है शिवालय। शिवबाबा पवित्रता की राखी बांधते है। शिवबाबा याद आया विकर्म विनाश हो जावेगा। शिवालय याद आया। वरसा याद आया। कितना सहज है। अच्छा मीठे–2 बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते।

अपन को आत्मा समझो.....अटेन्शन.....बाप को याद करो।